मिथिला की लोक कथाएं : भाग- 4

लोढ़े की खिचड़ी

विभा रानी

मिथिला की लोक कथाएं

भाग- 4

लोढ़े की खिचड़ी

विभा रानी

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: अगस्त, 2024

© विभा रानी

अपनी बात

मिथिला की लोक कथाएं यहां के जन मानस में बहुत पहले से हैं। कह सकते हैं कि यहाँ की धूल के एक- एक कण में एक न एक लोक कथा, लोक तत्व मौजूद हैं। जाने कितनी कथाएँ अभी भी मौखिक अवस्था में ही हैं। उन्हीं में से कुछ कहे- सुने किस्से 'लोढ़े की खिचड़ी' शीर्षक से 'मिथिला की लोक कथाएँ : भाग- 4' में मैंने लिए हैं।

लोक कथाओं के रचे जाने का काल- खंड, समय शायद ही कोई बता पाए। मुझे लगता है, बच्चों की फरमाइश पर दादी- नानी किस्से गढ़ती होंगी। आज की कथाएं कल की लोक कथाएं हो सकती हैं। लोक कथाओं की सरलता से हम इन्हें भ्रमवश बच्चों के लिए मान लेते हैं, जबकि ये कथाएँ बड़े- छोटे सभी के लिए हैं।

मिथिला की कथाओं, कला, संस्कृति, साहित्य आदि को आप सबके सामने रखते हुए मुझे बड़ा संतोष होता है। बच्चों को कथा सुनाते समय तो और भी मन खिल उठता है। और हो भी क्यों न! हम सबके मन के भीतर कहीं न कहीं एक बच्चा बैठा तो रहता ही है न, जो मौका पाते ही चुपके से सर उठाकर इधर-उधर झाँकने लगता है। मेरी माँ मुझे सोते समय तरह- तरह के किस्से और रामचरित मानस के पद सुनाती थीं। मैं अपनी बेटियों को हर रात एक न एक किस्सा सुनाकर सुलाती थी।

‘मिथिला की लोक कथाएँ : भाग1’ ‘कौआहंकनी’ शीर्षक से नॉटनल पर मौजूद है। इसका दूसरा भाग ‘ढाई दिन का नैहर’ और तीसरा भाग ‘शेर की मौसी बिल्ली’ भी यहाँ मौजूद है।

मिथिला की लोक कथाओं का तीसरा भाग ‘लोढ़े की खिचड़ी’ आपके सामने है। मुझे विश्वास है कि इन लोक कथाओं को भी आप पसंद करेंगे, अपने या किसी भी बच्चे के लिए इसे लेना, उन्हें भेंट करना, पढ़ना, पढ़कर बच्चों, यहां तक कि बड़ों को भी सुनाना चाहेंगे। नॉटनल के नीलाभ श्रीवास्तव का आभार। उनके सौजन्य से यह किताब आपके समक्ष है।

विभा रानी

मुंबई

सूची

मैं कहां गिरा?	5
सुई और तलवार	8
चीरो- जोड़ो	11
क्रोध बिगाड़े सौ- सौ काम	16
शाही सवारी	20
लोढ़े की खिचड़ी	24
भूत बनने का शौक	33
मुफ्त का ज्ञान- अपना अपमान	37
प्रेम का अमरूद	42
पाँच का नोट	45

मैं कहां गिरा?

एक बड़े ही ज्ञानी और सज्जन व्यक्ति थे। ज्ञान और विनम्रता उनमें कूट-कूट कर भरी हुई थी। वे सरल भी बहुत थे। सपने में भी किसी का बुरा करने का ख्याल उनके मन में नहीं आता था। अपने ज्ञान का सदुपयोग वे अपने आसपास के बच्चों को पढ़ाने और बड़े- बुजुर्गों को काम की बातें सिखाने में करते। वे किसानों को खेती से संबंधित बातों की जानकारी तरह तरह की किताबें पढ़कर देते। यहां तक कि वे लोगों को अपने घरों में भी साग सब्जियां उगाने की सलाह देते और उगाने के तरीके बताते।

उनके स्वभाव को देखकर सभी उनका बड़ा आदर करते। बच्चे तो उन्हें हमेशा घेरे रहते। वे बच्चों को हर दिन नई- नई कहानी सुनाते। कहानी सुनाते हुए वे उन्हें पेड़, पौधों, फसलों, फलों, सब्जियों आदि के बीजों की जानकारी देते रहते। किस्सों और बातों- बातों में ही वे उन्हें अपने कपड़ों में बटन टाँकने से लेकर अपने कपड़ों की धुलाई और किताब- कॉपी आदि कैसे रखते हैं- इन सबकी भी जानकारी देते रहते। बच्चों के लिए सबसे बड़ा आकर्षण थीं- इमली की गोलियां, जो हर बच्चे को अपना काम खत्म कर लेने पर मिलतीं।

एक दिन वे बाजार जा रहे थे। वही, इमली की गोलियां लाने। बाजार में एक जगह छोटा सा गड्ढा था। उसमें कभी पानी जमा हो गया था, जो सूखकर अब